उस रास्ते की तलाश में.....

अपने जीवन में सफर कर चूका हर रास्ते में,
हर रास्ते में मिलता हैं कुछ-न-कुछ नया।
कभी खुशी मिलती तो कभी घम,
कभी गुस्सा तो कभी शाँती।
इसीलिए पसंद हैं मुझे हर वक्त,
यात्रा करनी।

लेखिक क्यों, लेकिन क्यों,
मैं ना जानता, हर रास्ते में,
हर रास्ते में हमेशा एक ही,
एक ही चीज़ को पाया।
जो हर जगह हैं, जो हर जगह हैं,
कुछ लोग, कुछ आलसी लोग। जो अपने आप से लडते हैं

पता हैं मुझे, वह भी बदलना चाहते हैं.
लेखिन उसकेलिए तैयार नही हैं।
सोचते हैं की उनके समूह ने उनको,
उनको बनाया,
नाजानते हुए यह बात की,
मनुष्य ही खुद को बनाता हैं।

हर नए साल कहते हैं वो,
"नया साल, नया मैं"।
सोचता था, मैं भी यह,
सोचता था नया साल आएगाँ तो ही मैं
अपने आप को,
अपने आप को बदलूगाँ। यह सोच ही शुरु करता -
सबकुछ

कहता में बाद में करलूगाँ, समय कहा जा रहा है ?
नाजाने मैं, ना जाने मैं,
कभी ना रूखने वाला सागर,
जो ही समय,
उसीसे रूखने कहरहा था।
बीत गया यह पल भी।

याद है मुझे यह पल अब भी,
जब मैं अपने आप से इतना दूर होगया की,
वापस जाने का रास्ता तक ना मिल रहा था।
आलसी पन, गुस्सा सबने मुझे बिगाड़ा था।
समझ आने से पहले ही
हो गया था सबकुछ।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

ढूढ रहा था उस रास्ते को,
जिस्से लौट पाव मैं अपने ही पास,
जीने की उम्मीद तक नही थी,
ना था होसला,
लेखिन मेरे मन में, लेखिन मेरे मन में
एक रास्ते की उम्मीद थी,

निकल पड़ा ढूढने उस रास्ते को,
नजाने - नजाने कहाँ - कहाँ में पहुँच गया,
हर रास्तो से गुजरा मैने,
एक नम सुबह की तलाश मै, एक रास्ते की भी।
उन रास्तों ने मुझे एक सवाल तक पहुँचाया।
"अपने अंदर खोजो, क्या मिलता नही तुम्हे वह रास्ता?"

बैटा मैने एक ही जगह में,
खोज रहा' वह रास्ता मेरे अंदर।
मन के अंदर एक रोशनी की किरण
जैसे वह आई,
मेरे माँ चहरा मुझे याद आया,
मुझे मेरे सब सवालों और जीवन की बात समझ-
-आई. हुआ तबसे मेरे नया जीवन शुरू। एक उम्मीद से।

हर मनुष्य अपने जीवन में
तलाष करता है एक रास्ते को।
वह रास्ता जो उनको अपने आप,
अपने आप से मिलाए,
मेरा सफर, अभी - भी चलता ही जा रहा है।
ना जाने कब यह ललाष होगी खतम।-लेखिन
जानता हूँ की जरूरी हैं जरूरी है यह ललाष।-
कभी -भी रूखने का क्याल आई तो सोचो उस उषा को।